# अभ्यास शिक्षण में गुणवत्ता : एक समीक्षा

*डॉ.मालती,*

*शिक्षाशास्त्र विभाग,*
*इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद।*

## सारांश

*समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और मूल्यों को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को निभानी होती है। क्योंकि शिक्षक का कार्य ज्ञान व संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तान्तरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक सामाजिक परिवर्तन भी लाना है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण घटक शिक्षण अभ्यास होता है, जिसके माध्यम से छात्राध्यापक यथार्थ रूप से अध्यापकीय दायित्वों के निर्वहन के लिए तत्पर होने का प्रयास करते है। वास्तविक परिस्थितियों में भावी अध्यापकों के द्वारा किया जाने वाला वह अभ्यास कार्य जिसमें शिक्षण कौशल, युक्ति,तकनीक आदि की अनुप्रयोगात्मक क्षमता का विकास और प्रभावकारी अध्ययन–अध्यापन परिवेश की संरचना करना प्रमुख कार्य होता है। जब शिक्षा में उत्कृष्टता की बात की जाती है तो उसके लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन की उपलब्धता भी अनिवार्य हो जाती है। साथ–साथ यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत कार्य करने वाले तीन प्रकार अदा अध्यापक शिक्षक, भावी अध्यापक और अध्ययन–अध्यापन प्रणाली तथा साधन के बीच कितना समन्वय है क्योंकि अध्यापक शिक्षक इनमें प्रमुख तत्व है जिसकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण सम्बन्धी योग्यता, विषय वस्तु तथा विधि के बारे में गहन ज्ञान, प्रतिबद्धता, अध्यापन हेतु अन्तः अभिप्रेरण शिक्षण कौशल, दक्षता आदि ऐसे घटक है जो प्रभावकारिता को प्रभावित करते है।*

शिक्षा एक व्याापक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति में निहित आन्तरिक क्षमताओं का समग्र विकास करना है। किसी भी देश काल की शिक्षा पद्धति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है। यह सम्पूर्ण विश्व अपने उन सभी शिक्षकों का ऋणी है जिन्होंने ज्ञान के आधार पर संसार के आध्यात्मिक एवं भौतिक स्वरूप का निर्माण किया है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते है। अच्छी से अच्छी पाठ्यपुस्तक भी निपुण शिक्षकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। शिक्षा व्यवस्था चाहे जैसी हो शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है। वर्तमान समाज परिवर्तन और विकास के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और मूल्यों को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को निभानी होती है। क्योंकि शिक्षक का कार्य ज्ञान व संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तान्तरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक सामाजिक परिवर्तन भी लाना है। एक शैक्षिक आयोंजन है उन सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान करती है, जो किसी व्यक्ति को अध्यापक के उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने में समर्थ बनाते है।

प्रारम्भ में जैसा कि हम सभी जानते है कि शिक्षा समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण का कार्य करती है और किसी भी शैक्षिक योजना को सफलता की कुंजी शिक्षक ही है। यदि शिक्षक स्वयं गतिशील एवं सर्जनात्मक होगा तो उसका व्यवसाय भी सजीव एवं सक्रिय होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अध्यापक शिक्षा संस्थान में प्रवेश के लिए अभिक्षमता और सम्प्राप्ति परीक्षण जो अध्यापन के क्षेत्र से जुड़े हों, को साक्षात्कार के साथ जरूरी माना गया ताकि उत्तम गुणवत्ता स्तर के अदा प्राप्त हो सके। तभी प्रदा की गुणवत्ता अच्छी हो सकती है। आज सूचना प्रौद्योगिकी निर्भर समाज के लिए एक उत्तम अध्याापक को इन विधाओं के परिचय के अभाव में उपयोग नहीं माना जा सकता है।

स्पष्ट तौर से देखा जाए तो अध्याापक प्रशिक्षण अवधि अब दो वर्ष निर्धारित कर दी गयी है और विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे विद्यालयी सर्वेक्षण, प्रतिवेदन बनाना आदि पक्षों को सम्मिलित भी किया गया है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम कुशल अध्यापक बनाने में उपयोगी नहीं है। वर्तमान संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में लचीलापन होना आवश्यक है। कार्यकुशलता, दक्षता, सम्प्रेषण योग्यता के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण घटक शिक्षण अभ्यास होता है, जिसके माध्यम से छात्राध्यापक यथार्थ रूप से अध्यापकीय दायित्वों के निर्वहन के लिए तत्पर होने का प्रयास करते है। वास्तविक परिस्थितियों में भावी अध्यापकों के द्वारा किया जाने वाला वह अभ्यास कार्य जिसमें शिक्षण कौशल, युक्ति, तकनीक आदि की अनुप्रयोगात्मक क्षमता का विकास और प्रभावकारी अध्ययन–अध्यापन परिवेश की संरचना करना प्रमुख कार्य होता है। कुछ निम्नलिखित प्रमुख क्रियाओं का समावेश शिक्षण अभ्यास के दौरान किया जाता है जैसे :–

(अ) पाठ्य योजना का निर्माण करना तथा आवश्यक अनुदेशात्मक सहायक सामग्री निर्धारण।

(ब) प्रदर्शन पाठों का निरीक्षण करना एवं आलोचना करना।

(स) नियोजित पाठ्य –प्रारूपों की जांच करना।

(द) शिक्षण कौशल तथा विधियों से प्रयोग करते हुए अभ्यासात्मक पाठों का प्रस्तुतीकरण करना।

(य) पाठ प्रस्तुतीकरण के उपरान्त प्रतिपुष्टि देना

उपरोक्त क्रियाओं की पूर्ण करने के लिए निम्न उद्देष्यों को निर्धारित किया गया है–

(अ) शिक्षण प्रविधि के क्षेत्र में सैद्धान्तिक ज्ञान को अभ्यास में परिवर्तित करने की योग्यता का विकास करना।

(ब) भावी अध्यापक में विद्यालयी बच्चों की मानसिक स्थिति को सही ढंग से समझने की क्षमता कर विकास करना।

(स) अध्यापकीय दायित्व को ग्रहण करने के बाद वांछित विभिन्न भूमिकाओं को निभाने की क्षमता के विकास हेतु आवश्यक अनुभवों को प्रदान करना।

(द) विषयगत समस्याओं एवं परिस्थितियों से अवगत कराते हुए छात्राध्यापकों में दृष्टिकोण को विकसित करना।

(य) शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण, कक्षा प्रबन्धन, नियंत्रण और निर्देशन की क्षमता आदि का विकास करना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण अभ्यास के लिए हम ऐसे विद्यालय का चयन किया जायें जहॉ कि प्रबन्ध समिति और अध्यापकगण शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने के लिए तैयार हों, जहॉ उपयुक्त और आवश्यक भौतिक व मानवीय संसाधन सुविधा उपलब्ध हों। शिक्षण अभ्यास के लिए जिन विद्यालयों

का चयन किया जाता है उनके विविध रूप हो सकते है जैसे– प्रयोगात्मक तथा शिक्षण–अभ्यास प्रदर्शन तथा विशिष्ट विद्यालय।

शिक्षण अभ्यास के लिए अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के साथ प्रदर्शनात्मक विद्यालयों का होना आवश्यक है। परन्तु वर्तमान में अधिकांश अध्यापक शिक्षा संस्थाओं से प्रदर्शनात्मक विद्यालय सम्बन्धित नहीं है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षण अभ्यास के लिए शहर में स्थित प्राथमिक विद्यालयों, जूनियर हाईस्कूल या हाईस्कूल पर निर्भर रहना पड़ता है। जहॉ पर उन विद्यालयों का प्रबन्धन और नियंत्रण अध्यापन शिक्षा संस्थानों के हाथ में नहीं होता है, जिसका परिणाम यह होता है कि ये विद्यालय अपनी इच्छानुसार कक्षाओं को छात्राध्यापकों के लिए उपलब्ध कराते है। इस प्रकार की व्यवस्था में शिक्षण अभ्यास एक औपचारिकता बन जाता है और परिणामस्वरूप छात्रध्यापकों को वांछित प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है। इस बात की आवश्यकता है कि सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों के पास अपना प्रदर्शनात्मक विद्यालय हो जिससे एक ओर जहॉ छात्रों को समुचित शिक्षण अभ्यास कराया जा सके वहीं शैक्षिक अनुसंधानों के कार्यों के द्वारा नवाचारों और प्रयोगों को प्रोत्साहित किया जा सके। क्योंकि जब तक उत्तरदायित्व का बोध नहीं होगा तब तक शिक्षण प्रभावकारिता का विकास और उसकी गुणवत्ता में सुधार नहीं हो सकता है।

वर्तमान समय में जिस प्रकार से अध्यापक शिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि हो रही है वही शिक्षण अभ्यास की गुणवत्ता को प्रभावित करने का सबसे महत्वपूर्ण कारक अध्यापक शिक्षा संस्थानों में छात्राध्यापकों की संख्या में वृद्धि जिसकी वजह से सभी छात्राध्यापकों को एक साथ एक ही विद्यालय में शिक्षण अभ्यास के लिए मौका नहीं मिल पाता और शहर के कई विद्यालयों का सहारा लेना पड़ता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि संस्थानों में छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की संख्या काफी कम होती है, जिसका सीधा प्रभाव अभ्यास शिक्षण की गुणवत्ता पर पड़ता है क्योंकि संस्थानों में शिक्षकों की कमी होने पर प्रायः सामूहिक पर्यवेक्षकों की नियुक्ति में कठिनाई आती है। यही कारण है कि विषय विशेषज्ञ नियमित रूप से शिक्षण अभ्यास का निरीक्षण नहीं कर पाते है। दूसरी तरफ देखा जाय तो पर्यवेक्षक को अपने विषय में किये जा रहे शिक्षण अभ्यास पाठों का निरीक्षण करते हुए कमियों को ढूंढ़कर सुधार के लिए निर्देश प्रदान करना होता है। प्रायः ऐसा नहीं हो पाता है। पाठ–प्रस्तुतीकरण और उसके लिए की गई प्रस्तुती से लेकर कौशल प्रयोग, कक्षा अनुशासन, कक्षा अन्तः क्रिया और सहभागिता और अधिगम परिणाम आदि तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सुझााव देने का कार्य पर्यवेक्षक का होता है, जिसके लिए प्रत्येक पाठ का 4 या 5 मिनट निरीक्षण करना पर्याप्त नहीं हो सकता और न ही एक पर्यवेक्षक समस्त विषयों के शिक्षण को पर्यवेक्षित करने में सक्षम हो सकता है। पाठ्यवस्तु के विश्लेषण, तार्किक एवं सम्बन्धित क्रम में पुर्नसंगठन और नियोजन के लिए पर्यवेक्षण की आवश्यकता है जिसके अभाव में गुणात्मक विकास सम्भव नहीं है।

अभ्यास शिक्षण के दौरान निरीक्षण और मूल्यांकन के लिए कोई मापनी का निर्धारण भी नहीं है और न ही प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए कोई सर्वमान्य पद्धति है। इस प्रकार निरीक्षण कार्य अध्यापक शिक्षकों की रूचि और इच्छा पर निर्भर होता है एवं वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ रह जाता है। शिक्षण अभ्यास के प्रत्येक आयाम

के लिए अंक न दिए जाने के कारण मूल्यांकन में पारदर्शिता नहीं रह पाती है और प्रतिपुष्टि भी सामान्य ढंग से दी जाती है, जिसकी वजह से छात्राध्यापकों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन नहीं हो पाता है। जहॉ तक शिक्षण अभ्यास की गुणवत्ता का प्रश्न है, उसके लिए कम से कम शिक्षण कौशलों के तत्वों का एकीकृत रूप से किस सीमा तक प्रयोग किया जा रहा है। इसके निरीक्षण का कार्य पर्यवेक्षक का होता है पर उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। आलोचना प्रायः कक्षानुशासन, श्यामपट्ट, कार्य, प्रश्नस्थापना और सामान्य शिक्षण व्यवस्था के संदर्भ में ही करने का प्रयास किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण अभ्यास का अपेक्षित लाभ छात्राध्यापकों को नहीं मिल पाता है। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि आकस्मिक पर्यवेक्षक की व्यवस्था न होने के कारण छात्राध्यापक भी आलोचनात्मक (आन्तरिक मूल्यांकन) एवं अन्तिम पाठ (वाह्य मूल्यांकन) के दिन विशेष सावधानी के साथ शिक्षण अभ्यास का कार्य करते हुए अच्छे से अच्छा अंक प्राप्त करने के लिए प्रयास करते है और जिस प्रयास में वे कभी–कभी परिचय और पहुॅच के आधार पर सफल भी हो जाते हैं। इस प्रकार की कमियों को दूर किये बिना शिक्षण अभ्यास में कुशलता की प्राप्ति और गुणवत्ता को निर्धारित कर पाना दुष्कर हो जाता है।

इसके अलावा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि छात्राध्यापकों को चालीस से साठ पाठ पढ़ाने का जो शिक्षण अभ्यास करना होता है, उसके लिए अभ्यास या प्रदर्शन विद्यालयों के अभाव में कम सकम समय में संख्या पूर्ण करने के लिए बाध्यता आ जाती है। कक्षाओं की अनुपलब्धि, विद्यालय के छात्रों का उपेक्षात्मक व्यवहार , अध्यापकीय असहयोग जैसे अनेक कारक शिक्षण अभ्यास को कमजोर बना देते है। साथ ही साथ पाठ विषय विशेषज्ञों के द्वारा अभ्यासात्मक पाठों का शिक्षण अभ्यास के पूर्व जांच न किये जाने की वजह से विषय सम्बन्धी त्रुटियों का निराकरण करना कठिन हो जाता है। ऐसा नहीं है कि शिक्षण अभ्यास की गुणवत्ता को सिर्फ उपरोक्त कारण ही प्रभावित करते हैं बल्कि दूसरी तरफ विद्यालयी अध्यापक भी इस कार्य में रूचि नहीं लेते है, जिसके परिणामस्वरूप रचनात्मक आलोचना के स्थान पर विवरणात्मक आलोचना प्रधान पाठ निरीक्षण के कारण शिक्षण व्यवहारों को उपयुक्तता आदि की उपेक्षा होती है। समस्त शिक्षण अभ्यास के पाठों का मूल्यांकन करना तो दूर उसका नियमित निरीक्षण पर्यवेक्षकों के लिए कठिन होता है। फलतः मूल्यांकन की अवधारणा का व्यवहारिक प्रयोग शिक्षण अभ्यास के दौरान नहीं हो पाता।

शिक्षण अभ्यास में गुणवत्ता सम्बन्धी अन्य पहलुओं पर यदि ध्यान दिया जाये तो यह स्पष्ट होता है कि सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम को ज्यादा समय दिया जाता है और सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम 40 प्रतिशत के स्थान पर 70 प्रतिशत समय ले लेता है और शिक्षण अभ्यास के लिए 30 प्रतिशत समय ही बच पाता है। इससे व्यवहारिक पक्ष हमेशा उपेक्षणीय रहा है। वर्तमान समय में जिन संस्थानों में केवल सैद्धान्तिक कक्षाओं का समुचित संचालन किया जाता है, उस संस्थान को सबसे सफल अध्यापक शिक्षा केन्द्र की स्वीकृति मिल जाती है। उपयुक्त सहयोगी विद्यालयों का चयन न करना, प्रदर्शन–पाठ, सूक्ष्म एवं लघु शिक्षण पर आधारित अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन न करना, शिक्षण सिद्धान्त और अभ्यास में सामंजस्य को स्थापित न करना, मूल्यांकन के लिए अन्य विषय के समान ही परम्परागत

रूप का प्रयोग करना, वस्तुनिष्ठ पद्धति के अभाव में व्यक्तिनिष्ठता का प्रभाव, पाठ्यसहगामी क्रियाओं के मात्र खानापूर्ति के रूप में संचालित करना आदि अनेक कठिनाईयां है जिन्हें दूर किए बिना गुणवत्ता नहीं आयेगी। क्योंकि वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण अभ्यास के पहले पूर्वाभ्यास सम्बन्धी प्रशिक्षण कक्षाओं के आयोजन की उपेक्षा के कारण ही शिक्षण अभ्यास में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती है।

प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का शिक्षण अभ्यास सर्वाधिक उपेक्षित पक्ष है पाठ योजना निर्माण से लेकर अध्यापकीय निरीक्षण, समय व विषय वस्तु का समन्वय, विश्लेषणात्मक मूल्यांकन तक प्रत्येक अध्ययन सम्बन्धी व्यवहारिकता को स्वयं वास्तविक स्थिति में करने के पहले पूर्वाभ्यास का अत्यधिक महत्व है। क्योंकि सूक्ष्म शिक्षण, लघु शिक्षण अनुरूपित शिक्षण आदि के बारे में सैद्धान्तिक ज्ञान तो दिया जाता है, लेकिन व्यवहारिक अनुभव एवं अभ्यास के लिए सार्थक प्रयास नहीं किया जाता है। ऐसे में गुणात्मक विकास की सम्भावना कम ही नहीं बल्कि समाप्त हो जाती है। जैसे– व्यक्तित्व, स्वर, पाठ–योजना निर्माण, कर्मबद्धता प्रश्नस्थापना, छात्र सहभागिता, सहायक सामग्री का प्रयोग श्यापपट्ट कार्य, गृहकार्य आदि के लिए बिन्दुवार प्रतिपुष्टि प्रदान करने का प्रावधान है। प्रतिपुष्टि की बिन्दुवार प्रतिपुष्टि के रूप स्वीकार किया जाता है। जिसमें शिक्षण कौशल और उनके घटकों का प्रयोग, कौशल समाकलन, शिक्षण की छात्र अधिगम के संदर्भ में अधिगम की प्रभावकारिता एवं शिक्षण उद्देश्य प्राप्ति की सीमा आदि कारक आते है।

यदि शिक्षण अध्यापन के समय दोनों बातों को ध्यान में रखकर पर्यवेक्षक के द्वारा प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है तो अवश्य ही शिक्षण अभ्यास के माध्यम से गुणवत्ता स्तर में उन्नयन की सम्भावना बन सकती है। ऐसे में सामान्य और बिन्दुवार प्रतिपुष्टि को अपनाना होगा।

शिक्षण अभ्यास के मूल्यांकन के लिए शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति और निष्पादन को महत्व देना आवश्यक है। प्रारम्भिक व अन्य स्तरों पर तकनीकी का प्रयोग करना शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक हो सकता है। इसके साथ –साथ अभ्यास शिक्षण प्रक्रिया को तर्कसंगत और अर्थपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक इनटर्नशिप कार्यक्रम को लागू किया गया है। जिससे कम से कम छात्राध्यापक सम्पूर्ण विद्यालयी कार्यक्रम में भाग ले सके और विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन कर सकें। शिक्षण अभ्यास के साथ–साथ कुछ प्रयोगात्मक कार्यों को जोड़ना भी आवश्यक है जिससे छात्राध्यापक सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से परिचित हो सके और उन समस्याओं के समाधान के लिए उनमें समुचित अर्न्तदृष्टि का विकास हो सके। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण अभ्यास हेतु बौद्धिक कौशल, मानव सम्बन्ध निर्माण, शिक्षण कौशलों के विकास को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है, जिसमें शिक्षणाभ्यासपूर्व, शिक्षणाभ्यास कालीन, शिक्षणाभ्यासपरान्त और प्रायोगिक क्रियाकलापों को स्थान दिया गया है।

इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि अध्यापक शिक्षकों के लिए दिशा निर्देशन सम्बन्धी कार्यक्रम का संचालन एवं प्रबन्धन न किये जाने के कारण इसमें निहित कमियों कोदूर कर पाना असम्भव है। उचित नियोजन और प्रबन्ध के अभाव में अपव्यय का होना स्वाभाविक है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि जब शिक्षा में उत्कृष्टता की बात की जाती है तो उसके लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन की उपलब्धता भी अनिवार्य हो जाती है। साथ–साथ यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत कार्य करने वाले तीन प्रकार अदा अध्यापक शिक्षक, भावी अध्यापक और अध्ययन–अध्यापन प्रणाली तथा साधन के बीच कितना समन्वय है क्योंकि अध्यापक शिक्षक इनमें प्रमुख तत्व है जिसकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण सम्बन्धी योग्यता, विषय वस्तु तथा विधि के बारे में गहन ज्ञान, प्रतिबद्धता, अध्यापन हेतु अन्तः अभिप्रेरण शिक्षण कौशल दक्षता आदि ऐसे घटक है जो प्रभावकारिता को प्रभावित करते है। भावी अध्यापकगण की शैक्षिक योग्यता, बौद्धिक स्तर, प्रविष्टि व्यवहार, तत्परता, प्रत्यक्षीकरण, आकांक्षाएं भी समाकलित रूप में गुणवत्ता को प्रभावित करते है।

अध्ययन अध्यापन प्रणाली और साधन भी गुणवत्ता को प्रभावित करते है। इस प्रकार अदा के तीनों तत्वों के गुणात्मक स्तर को नियंत्रित करने से प्रदा स्वयं ही गुणवत्ता पूर्ण हो जायेगी।

## संदर्भ ग्रन्थ


1. भट्टाचार्य, जी सी (2003), अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. श्रीवास्तव, आर. सी. (1997) टीचर एजुकेशन इन इंडिया, रीजेन्सी पब्लिकेशन
3. श्रीवास्तव, आर. सी. बोस के (1973) : थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ टीचर एजुकेशन इन इंडिया, युग, पब्लिकेशन, इलाहाबाद
4. नेशनल करीक्यूलय फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन (2009)


*Copyright © 2017, Dr. Malti. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*